


---

# Nandikeshvara Stotram

——  
नन्दिश्वरस्तोत्रम्

——  

## Document Information



---

Text title : Nandikeshvara Stotram

File name : nandikeshvarastotram.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Translated by : Hindi: Agnishekhar, English: P. R. Kannan

Latest update : June 6, 2022

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 6, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Nandikeshvara Stotram

---

### नन्दिश्वरस्तोत्रम्

---



भवेशं भवेशानमीज्यं सुरेशं

विभुं विश्वनाथं भवानीसमाधम् ।

शरच्चन्द्रगात्रं सुधापूर्णनित्रं

भजे नन्दिशेशं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ १ ॥

अर्थात् - देवादिदेव हे पार्वती-प्रिय नन्दिशेश! आप संसार मोक्षदाता स्तुत्यदवश विभु तथा दीन-दुषियों का दुःख दूर करते हैं। शरीर शरत्काल के चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है और नेत्र अमृतधर्मा हैं। मैं आपका स्तवन करता हूँ।

I worship Nandikeswara, the lord of wellbeing, the lord of samsara, the adorable lord of Devas, the all-pervading, the lord of universe, who is kind and soft like Bhavani, whose form shines like the autumnal moon, with eyes full of nectarine sweetness, who removes the misery of the poor. (1)

छिमाद्रौ निवासं स्फुरच्चन्द्रयूढं

विभूतिं ध्यानं मलानीलकण्ठम् ।

प्रभुं दिग्भुजं शूलटङ्कायुधाढ्यं

भजे नन्दिशेशं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ २ ॥

अर्थात् - निर्धनों के दुःखों का नाश करने वाले और डैलासवासी हे नन्दिश्वर ! आपके माथे पर छिमालय से निकलते चमकीले चाँद का मुकुट है, कण्ठ नीला है, शरीर पर विभूति है। त्रिशूल और तलवार वाली आपकी भुजाओं लंबी हैं अर्थात् आप मलाभाड़ हैं। मैं आपका भजन करता हूँ। मेरे दुःख दूर करो।

I pray to Nandikeswara, who resides in Himalayas, who wears on his head the rising Moon, who is adorned with Vibhuti on his body, whose throat is blue, the lord, with long arms extending in directions, holding weapons of Trisula and sword, who is the remover of the misery of the poor. (2)

भवेशं गजेशं प्रपन्नार्तिनाशं

विभास्वत्समुद्यत्प्रभाकान्तिपूरम् ।

भवानीयुतार्धाङ्गशोभाभिरामं

भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ३ ॥

अर्थात् - संसार के स्वामी तथा गजासुर के संडारक के शरणागतवत्सल नन्दिकेश्वर! उदित होते सूर्य की प्रभा के सामान आपकी कान्ति है । पार्वती के साथ बैठे आप और भी शोभायमान हैं और दीन-दुभियों के दुःख दूर करते हैं । मैं आपका भजन करता हूँ । मेरा दुःख दारिद्र्य दूर करो ।

I worship Nandikeswara, the lord of Samsara, the destroyer of Gajasura, the remover of the misery of those who surrender, whose radiance is that of rising Sun, who is the beloved of the radiant Shiva - who shares half his form with Bhavani, who is the remover of the misery of the poor. (3)

मृगाङ्गायुतप्रक्षदीप्तिप्रकाशं

ज्वलद्भक्तिकेशं शशाङ्गार्धभालम् ।

सदा भक्तचित्ते स्फुरन्मोदरूपं

भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ४ ॥

अर्थात् - हे प्रभु नन्दिकेश्वर! आप यन्द्रशेखर हैं । अपरिमित चंद्र प्रकाश के सामान उज्ज्वल तथा चमकदार रुदाक्षमाला की कान्ति से प्रकाशमान हैं । दीन-दुभियों का दुःख दूर करने वाले हे नन्दिकेश, आप की जटाओं अग्नि के सामान हैं । मैं आपका भजन करता हूँ ।

I pray to Nandikeswara, who is radiant with the shine exuded by countless moons, whose hair shines like blazing fire, whose forehead is like half moon, whose cheerful form lights up the minds of devotees always, who is the remover of the misery of the poor. (4)

वराभीतिहस्तं कुठारेशपाणिं

जटाजूटगङ्गोत्पलसद्धारिधारम् ।

विषाशं मङ्गोक्षाधिरुद्ध मदारिं

भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ५ ॥

अर्थात् - कामदेव के संडारकर्ता हे नन्दिकेश! आप अपने एक हाथ से भक्तों को वर और दूसरे से अभयदान एक साथ देते हैं । आपके हाथ में कुठार है, जटाजूट में गंगा की धारा चमकती है और नन्दि आपकी सवारी है । दीनों के नाथ और विषपायी हे प्रभो! मैं आपका भजन करता हूँ ।

I worship Nandikeswara, whose hands show vara and abhaya mudras, another hand holds a large axe, whose matted tresses shine with swirling waters of Ganga, who consumed poison, who rides the great bull, who is the enemy of Kamadeva, who is the remover of the misery of the poor.(5)

जगत्या विभूषं मृगेन्द्राञ्जिनधृत्  
 षडाभ्रायमन्त्रप्रसिद्धार्थमूलम् ।  
 प्रसादादि मन्त्रस्फुरजृष्टानलेतुं  
 भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ६ ॥

अर्थात् - हे भगवान नन्दिकेश! आप कल्याणकारी आशतोश, आशुराश, दया ऐश्वर्यदाता दीनों के दण्ड करने वाले और सभी सिद्धियों के स्वामी हैं । आपका जटाओं पिंगल वर्ण की हैं । मैं आपका भजन करता हूँ ।

I pray to Nandikeswara, for whom world is adornment, who wears tiger skin, who is at the root of the meaning of Shadamnaya mantra, who is the cause of the outburst of knowledge of mantras of Prasada etc., who is the remover of the misery of the poor. (6)

भवानीपदाम्भोजदृत्पद्मसंस्थं  
 सुरेन्द्रादि देवैः सदा सेव्यमानम् ।  
 नगेन्द्रात्मजप्राणनाथं शरण्यं  
 भजे नन्दिकेशं दरिद्रार्तिनाशम् ॥ ७ ॥

अर्थात् - दीनों के दृष्टों का उरण करने वाले हे शरणागत नन्दिकेश! पार्वती के यरण कमल आपके लृद्य-कमल में विद्यमान रहते हैं । आप पार्वती के प्राणनाथ हैं और ठन्द्रादि देव आपकी सदा सेवा करते हैं । मैं भी आप हूँ और आपका भजन करता हूँ । नि रहते हैं ।

I pray to Nandikeswara, who has in his heart-lotus the lotus feet of Bhavani, who is ever worshipped by Devendra and other Devas, who is the lord of the very life breath of Parvati (Shiva himself), who is the shelter for all beings, who is the remover of the misery of the poor. (7)

भवे नन्दीशानं सकलमनुसिद्ध्यैककरणं  
 वसु-श्रोत्रैरेभिः प्रतिदिनमपि स्तौति नित्यम् ।  
 तदैवेश-प्रीत्या निभिलसुभभागीऽ जगति  
 परं मोक्षं चान्ते परमपदमाप्नोति सडसा ॥ ८ ॥

अर्थात् - षस संसार में जो व्यक्ति मन्त्र सिद्धि के दाता भगवान नन्दिकेश की उक्त आठ श्रोत्रों से प्रतिदिन नियमपूर्वक स्तुति करता है वह भगवान की प्रसन्नता से तडाल समस्त सुभों को पाकर अन्त में मोक्षरूपी परम पद को पाता है । (श्री यामुण्डा नन्दिकेश्वर का षतिहास एवं मडात्म्य से उद्धृत) ।

One, who adores every day with these eight verses Nandikeswara, who grants siddhi of all mantras in this world, attains all comforts in this world and at the end attains the supreme state of Moksha quickly. (8)

एति नन्दिश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

नन्दिश्वरस्तोत्रम्

भवेशं भवेशानमीड्यं सुरेशं

विभुं विश्वनाथं भवानीसमाधम् ।

शरव्यन्द्रगात्रं सुधापूर्णनित्रं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ १ ॥

छिमाद्रौ निवासं स्फुरव्यन्द्रयूडं

विभूतिं ध्यानं मडानीलकण्ठम् ।

प्रभुं दिग्भुजं शूलटङ्कयुधाढ्यं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ २ ॥

भवेशं गजेशं प्रपन्नार्तिनाशं

विभास्वत्समुद्यत्प्रभाकान्तिपूरम् ।

भवानीयुतार्धाङ्गशोभाभिरामं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ ३ ॥

मृगाङ्गायुतप्रक्षदीमिप्रकाशं

ज्वलद्भक्तेशं शशाङ्गार्धभालम् ।

सदा भक्तयित्ते स्फुरन्मोदरुपं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ ४ ॥

वराभीतिहस्तं कुठारेशपाणिं

जटाजूटगगङ्गोत्वसद्धारिधारम् ।

विषाशं मडोक्षाधिरुढ मदारिं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ ५ ॥

जगत्या विभूषं मृगेन्द्राङ्गिनधृत्

षडाभ्यायमन्त्रप्रसिद्धार्थमूलम् ।

प्रसादादि मन्त्रस्फुरज्ज्ञानउतुं

भजे नन्दिश्वरं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ ६ ॥

भवानीपदाम्भोजलुत्यन्नसंस्थं

सुरेन्द्रादि देवैः सदा सेव्यमानम् ।

नगेन्द्रात्मजाप्राणनाथं शरण्यं

भजे नन्दिकेशं हरिद्रार्तिनाशम् ॥ ७ ॥

भवे नन्दीशानं सकलमनुसिद्ध्यैककरणं

वसु-श्लोकैरेभिः प्रतिदिनमपि स्तौति नित्यम् ।

तदैवेश-प्रीत्या निष्किलसुभभागीऽ जगति


परं मोक्षं यान्ते परमपदमाप्नोति सऽसा ॥ ८ ॥

एति नन्दिकेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णात् ।


Proofread by PSA Easwaran

English translation by P. R. Kannan

---

——  
*Nandikeshvara Stotram*

pdf was typeset on June 6, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

